ISSN 2395-051X

भारत चीन संबंध 1947 से 2020

डॉ. भावना यादव
सहायक प्राध्यापक राजनीतिविज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

सारांश :

भारत चीन संबंध 1947 से 2020 तक लगातार बदलते रहे है। जहां प्रांरभ में मैत्री भाव था तो मध्य काल विवादों और संघर्षो से भरा हुआ है। वहीं वर्तमान में दोनों देशों के बीच संबंध आर्थिक क्षेत्र में मैत्री पूर्ण दिखते है तो सीमा पर संघर्ष से भरें हुये शत्रुतापूर्ण है। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन महाशक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाना चाहता है जिसमें वह भारत को एक रूकावट के रूप में देखता है। और भारत ही उसका सबसे बड़ा बाजार भी है। ऐसे में भारत को आर्थिक रूप सें समक्ष होने की आवश्यता है तो चीन को भी उदार मैत्री भाव अपनाते हुये रिश्तों को सुधारने की जरूरत है।

मुख्य शब्द - साम्यवाद, लोकतंत्र विवाद, मित्रता, संघर्ष, युद्ध, समन्वय, मतभेद।

ईसा के जन्म से 500 साल पहले चीन के नामचीन फौजी जनरल सुन जू ने 'द आर्ट ऑफ वॉर' नाम की किताव में लिखा था "जंग की सबसे बेहतरीन कला है कि बिना लड़े हुए ही दुश्मन को परास्त कर दें" सैकड़ों सालों बाद भी चीन में इस किताव की बातों को आइडियल माना जाता है।

भारत चीन के बीच जारी वार्डर तनाव को समझने के लिए "जंग की इस बेहतरीन कला" को ध्यान में रखना होगा। क्योंकि भारत और चीन के संबंध हजारों साल पुराने हैं संभवतः तीसरी सदी में सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया अनेक बौद्ध प्रचारक भारत से चीन गये जिनमें कुमार जीव, बुद्ध, धर्म क्षेम, परमार्थ इत्यादि है। जिन्होंने अपना सारा जीवन बौद्ध साहित्य के चीनी भाषा में अनुवाद करने एवं बौद्ध धर्म के प्रचार में लगा दिया उसी प्रकार बौद्ध धर्म के बारे में और विस्तृत जानकारी प्रदान करने के लिये फाह्यन, हेनसांग जैसे यात्री भारत आये। कहा जाता है कि पूर्वी भारत के कई शासकों ने चीनी सम्राट के दरबार में अपने शासक भेजे थे चीनी सम्राट के दूत भी इन शासकों के दरवार में आये थे।

इस प्रकार चीन के साथ ऐतिहासिक रूप से हमारे सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक संबंध रहे है ब्रिट्रिश काल मे भी विशेष रूप से 1931 से चीन जापान युद्ध के समय नेताओं की पूरी सहानुभूति के साथ।

वर्तमान संवंधों की शुरुआत 1949 में हुई जबकि गैर साम्यवादी देशों में भारत ऐसा पहला देश था जिसने चीन को राजनायिक मान्यता प्रदान की। साथ ही चीन की संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य के रूप में भारत द्वारा अनुशंसा की गई। इतना ही नहीं अमेरिका की नाराजगी की कीमत पर भारत ने कोरियाई युद्ध में चीन को समर्थन दिया।

1947 मे भारत स्वतंत्र हुआ तथा 1949 में चीन में साम्यवादी क्रांति हुई भारत की पूरी सहानुभूति चीनी की साम्यवादी सरकार के प्रति थी। तथा भारत सरकार ने चीन की साम्यवादी सरकार का अनेक मुद्दों पर न केवल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन किया, बल्कि नई सरकार को यू.एन.ओ. में स्थायी सदस्यता दिलाने के लिये ऐड़ी- चोटी का जोर लगाया, यद्यपि भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. अम्बेडकर एवं समाजवादी नेता जय प्रकाशनारायण के नेहरू सरकार की चीन से बढ़ती हुई इस असीम श्रद्धा के बारे में खुलकर मतभेद थे।

भारत ने इस दौर में अमरीका की उन नीतियों की खिलाफत की जो चीन को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों या संस्थाओं में उचित स्थान दिलाने में बाधा पैदा करती थी। यह भारत चीन संबंधों के इतिहास का मधुर मैत्री काल था। जहां 1954 में हुए एक समझौते में भारत ने तिब्बत से अपने अतिरिक्त देशीय अधिकारों को चीन को सौंप दिया विंसैण्ट शौयाब के अनुसार चीनियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध कायम रखने का जितना प्रयास नेहरू ने किया संभवतः विश्व में उतना किसी ने भी नहीं किया। इसी दौर का हिंदी चीनी भाई-भाई का नारा बहुत लोकप्रिय रहा।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत चीन के मध्य मतभेद व उनके कारण -

स्वतंत्रता के पश्चात् मोटे तौर पर भारत चीन में मतभेद के प्रमुख कारण थे।

- सीमा विवाद
- दलाई लामा को शरण दिया जाना।
- तिब्बत पर आक्रमण।

वर्तमान में भारत चीन मतभेद का प्रमुख कारण है चीन को विस्तारवादी नीति।

यहां इस बात को ध्यान में रखना होगा कि चीन का केवल भारत से नहीं बल्कि 27 अन्य देशों से अपनी विस्तारवादी नीति के कारण विवाद चल रहा है।

"चीन का भारत जापान समेत कई देशों के साथ विवाद चल रहा है क्योंकि जमीन हड़पने की विस्तारवादी नीति मौजूदा दौर में संभव नहीं है इसलिए चीन ने अपनी ताकत बढ़ाने के लिए आर्थिक गतिविधियों को हथियार बनाया है। इसके दम पर वह दुनियाभर में दबदबा बनाना चाहता है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने 15 साल में 125 देशों में भारी-भरकम निवेश किया है। इसके अलावा कई देशों को कर्ज के जाल में फंसाकर उनकी जमीन हड़पने की चाल भी चली है। चीनी कंपनियों ने श्रीलंका में भारी-भरकम निवेश किया है ऊंची दर पर ब्याज वसूलने के कारण अब श्रीलंका की वित्तीय स्थिति डगमगा रही है। कर्ज न लौटने की स्थिति में चीनी कंपनियां अब मालिकाना हक मांग रही है ऐसा ही उसने बांग्लादेश और पाकिस्तान के साथ किया है।[1]

भारत चीन के बीच 3488 किलोमीटर लंबी सीमा पश्चिमी अक्साई चीन, मध्य और पूर्वी क्षेत्रें में विभाजित है जहां 1. Sino- India border dispute 2. Aksai Chin- Controlled by China and Claimed by India 3. Arunachal Pradesh - Controlled by India and Claimed by China 4. Doklam 5. Tearg District - Controlled by India and Clamied by China 6. Shak syarvalley- Controed by China and Claimed by India 7. Bhutan China Border यहां दुनिया के सबसे प्रचालित अनसुलझे सीमा विवाद है। यह विवाद का महत्वपूर्ण कारण तिब्बत भी है जिसे मधुर मैत्री काल में भारत ने चीन को दे देने की गलती करके भारत पर चीन

के आक्रमण को सरल बना दिया। यहां परिस्थितियां बदली और तिब्बत के खम्पा क्षेत्र में बड़े पैमाने पर चीनी शासन के विरुद्ध विद्रोह ने जन्म लिया जो 1959 तक चला और चीन द्वारा विद्रोह को कुचलने के बाद 1959 में दलाईलामा ने भारत में राजनीतिक शरण ली। जिसे चीन ने शत्रुतापूर्ण कार्य मान उपयुक्त सारी परिस्थितियों के बीच 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया। डॉ.वी. पी. दत्त के अनुसार चीन ने भारत पर आक्रमण के तीन उद्देश्य -

1. अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना
2. अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की निर्बलता को प्रदर्शित करना
3. भारत को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपमानित करना।

इसके अतिरिक्त चीन भारत पर युद्ध का बोझ डालकर लोकतंत्रात्मक पद्धति से उन्नति करने में बाधा डालना भी उसका अपनी राजनीतिक विचारधारा का एक उद्देश्य था।

युद्ध में जब चीन की स्थिति मजबूत थी तब चीन ने एक पक्षीय युद्ध विराम की घोषणा कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इस पर भी विचारकों के विचारों में भेद है परंतु युद्ध विराम के कारणों से प्रायः सभी सहमत थे। वे कारण थे-

1. चीन सिर्फ अपनी शक्ति प्रदर्शन कर एशिया में अपनी मजबूत स्थिति प्रमाणित करना चाहता था।
2. चीन स्वयं विषम मौसम और विषम भौगोलिक स्थिति के कारण युद्ध जारी रखने में समर्थ नहीं था
3. सोवियत संघ ने चीन के इस आक्रमण को अनुचित बताया।
4. भारत को विदेशों से भारी मात्र में सैनिक सहायता तेजी से प्राप्त हो रही थी।
5. चीन अपने लक्ष्य में सफल हो चुका था (भारत की प्रतिष्ठा को नष्ट कर, भारत की निर्बलता जग जाहिर कर)
6. सबसे महत्वपूर्ण कारण युद्धविराम का यह था कि चीन अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सहानुभूति चाहता था कि वह युद्ध प्रेमी नहीं बल्कि उसे मजबूरी में युद्ध करना पड़ा।

युद्ध में भारत की पराजय का कारण था कि चीन पहले से युद्ध की तैयारी कर रहा था और भारत मित्रता के भरोसे था।

भारत और चीन के प्राचीन संबंधों की घनिष्ठता को बढ़ा चढ़ाकर देखा गया और यह मानने की भूल की गई थी कि बौद्ध धर्म की जन्मभूमि भारत, चीन का एक प्रकार का धर्मगुरु है और चीन उसका सम्मान करेगा। यहां यह अनदेखा किया गया कि चीनी लोग प्राचीन काल से ही चीन को विश्व सभ्यता का केंद्र मानते आये हैं और चीन विस्तारवादी नीति में विश्वास करता रहा है।

यह माना गया है कि चीन ने भारत पर न कभी आक्रमण किया और न भविष्य में करेगा। यहां इस बात पर विचार नहीं हुआ कि भूतकाल में आक्रमण न करने का कारण चीन की शांतिप्रियता नहीं बल्कि हिमालय की दुर्गम पर्वतमालाएं थी।

महत्वपूर्ण भारतीय भूल यह भी थी कि द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात उत्पन्न हुई परिस्थितियों में भविष्य में पूर्वी एशिया में नेतृत्व के लिए संघर्ष होना ही था।

1954 के पंचशील समझौते के चलते भारत सरकार का चीन के प्रति अति विश्वास था।

साथ ही चीनी तिब्बत की ऊंची चोटियों से आक्रमण कर रहे थे और भारतीय निचली घाटियों में थे।

युद्ध विराम हुआ और वास्तविक नियंत्रण रेखा एल.ए.सी अस्तित्व में आई। परंतु 1967 में नाथूला और चोला में एल.ओ.सी. पर भारतीय सैनिकों ने कटीले तार लगाने की कोशिश की तो सैन्य भिड़त शुरू हो गई जो 2 माह चली। 1986 में अरुणाचल प्रदेश को राज्य घोषित करने के बाद टकराव की स्थिति बनी। इसके बाद 2017 में चीन ने डोकलाम पठार के पास सड़क बनाने की कोशिश कर संघर्ष को जन्म दिया। 2020 में मई और जून 15-16 को चीनी सेना ने गलवांन में संघर्ष की स्थिति पैदा की।

कुल मिलाकर चीन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुद्दों को सुलझाने की जगह बढ़ा रहा है 1962 से लगभग 6 दशक बीत चुके हैं लेकिन भारत-चीन विवाद आज भी न केवल अनसुलझा है वरन 2020 जून के बाद ज्यादा गंभीर हो गया है। इसके संभवतः निम्न कारण हो सकते हैं।

1. भारत 1962 की तुलना में आर्थिक राजनीतिक और सैन्य मामलों में सशक्त हुआ है साथ ही सीमा क्षेत्रों में संरचनात्मक विकास भारत को सशक्त कर रहे हैं वहीं चीन की बैचेनी बढ़ा रहे हैं। ''भारत ने अपनी सीमा की तरफ बुनियादी ढांचे के काम को तेजी दी है इस करण चीनी सैनिकों का उन जगहों पर भी भारतीय सैनिकों से सामना हो रहा है जहां वे पहलें उन्हें देखने के अभ्यस्त नहीं थे इसने भी चीनी सेना को कुपित किया है।''[4]

2. शी जिनपिंग ने नवंबर 2012 में 18 वीं पार्टी कांग्रेस में इशारा किया था कि उनका मुख्य उद्देश्य चीनी सपने को साकार करना होगा, इसमें महान चीन राष्ट्र का पुनर्जीवन या दूसरे शब्दों में 2021 तक चीन द्वारा उन क्षेत्रों को फिर पाना जो विरोधी साम्राज्यवादी विदेशी ताकतों द्वारा समझौतों से खो गए थे। इन क्षेत्रों में अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और लद्दाख भी शामिल है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के 2021 में 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग पर अतिरिक्त घरेलू दबाव भी है।[3]

3. ''अनुच्छेद 370 के हटने से चीन का डर बड़ा है और वह अब तक चार मौकों पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में कश्मीर मुद्दा उठा चुका है। साथ ही अमेरिका चीन व्यापार युद्ध जो कि चीन को बढ़ाने से रोकने के लिए अमरीका की दोनों पार्टियों द्वारा समर्थित प्रयास है चीन की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहा है खासतौर पर टेक्नोलॉजी सेक्टर को जिससे बीजिंग का वैश्विक महाशक्ति बनने का सपना कमजोर पड़ रहा है।''[4]

4. OBOR (वन बेल्ट वन रोड) चीन की एक बुनियादी ढांचा परियोजना है जिसमें China Pakistan Economic Corridor CPEC शामिल है CPEC भारत को स्वीकार नहीं क्योंकि यह पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से गुजरती है जो भारत की क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन हैं साथ ही ''70 देंशों को चीन से जोड़ने की महत्वकांक्षी योजना का नाम है बेल्ट एडं रोड इनीशिएटिव जिसे चीन ने 2013 में शुरू किया था। कई देश चीन की इस परियोजना का समर्थन कर रहे है लेकिन अमेरिका और भारत ने इसका पुरजोर विरोध किया है।''[5]

Boundary Disput भारत और चीन के वीच सीमा पर कोई Line of Actual Control नहीं है। फलस्वरुप सीमा क्षेत्रीय विवाद जैसे पोंगोगत्सो मोरीरी झील का विवाद, डोकलाम विवाद, अरुणाचल प्रदेश में आसफिला क्षेत्र पर विवाद है। ''चीन केवल लद्दाख में ही नहीं बल्कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कई इलाकों

में यथास्थिति बदलने की तैयारी में लगा हुआ है। हिमाचल प्रदेश के खेमकुला में जहां वह नियंत्रण रेखा के समीप सड़क बना रहा है वहीं उत्तराखण्ड के ठीक सामने पड़ने वाले कैलाश मानसरोवर पर्वत के पीछे उसने ग्रांउड टू एयर मिसाइल डिफेंस सिस्टम तैनात कर दिया है। यह सीमा से मात्र 19 कि.मी. की दूरी पर है। पिछले दिनों चीन ने यहां 1000 सैनिकों की भी तैनाती की थी।..... सिक्किम के डोकाला और नाकुल से 100 कि.मी. में ऑल वेदर हेलीपैड का निर्माण किया और यहां 50 कि.मी. में ही मिसाइल साइट की है।"[6]

5. सीमा पार आतंकवाद के मुद्दे पर चीन द्वारा पाकिस्तान का बचाव एवं समर्थन (महमूद अजहर को वैश्विक आतंकी घोषित कराने में रोड़े डाले)

6. चीन ने हिंद प्रशांत महासागर क्षेत्र में भारत (Quad) के सदस्य की भूमिका पर भी असंतोष जाहिर किया है।

7. स्ट्रिगं ऑफ पर्ल्स भारत को घेरने के लिहाज से चीन द्वारा अपनाई गई एक अघोषित नीति है जिसमें चीन द्वारा भारत को समुद्री पहुंच के आसपास के बंदरगाहों और नौसेना ठिकानों का निर्माण किया जाना शामिल है।

8. नदी जल विवाद ब्रह्मपुत्र नदी के जल बंटवारे को लेकर भी दोनों देशों में विवाद है।

9. भारत को एन.एस.जी. का सदस्य बनने से रोकने में चीन की महत्वपूर्ण भूमिका है (परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह को सदस्य बनाने से रोकने में)

10. व्यापारिक असंतुलन वैसे तो चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है परंतु भारत इस व्यापारिक घाटे का बुरी तरह शिकार है।

इतना ही नहीं "दरअसल चीन भविष्य में असल युद्ध के बजाय डिजिटल डेटा का इस्तेमाल कर ऐसे युद्ध की तैयारी में जुटा है, जिसमें वह सेना उतारे बिना शत्रु देश को बर्बाद कर सकें। नीति तय करने वालों और उनके फैसलों को प्रभावित करने वालों की छोटी-बड़ी जानकारी जुटाकर चीन न केवल पहले सेही फैसलों का पता करना चाहता है बल्कि उन्हें अपने हिसाब से बदलवाना भी। चीनी जासूसी के अलावा कई और हथकंडे भी अपना रहा है, जिससे वह अपना वर्चस्व कायम कर सके। कोरोना का जनक होने के बावजूद उसका आर्थिक फायदे में होने को भी कई विशेषज्ञ चीनी साजिश का ही हिस्सा मान रहे है।"[7]

कुल मिलाकर उपरोक्त तथ्यों को देखते हैं तो लगता है कि स्वतंत्रता के बाद भारत-चीन संबंधों की कहानी भारतीय नेताओं की चीन के प्रति सकारात्मक सोच अटूट विश्वास और साथ मिलकर चलने पर आधारित थी तो दूसरी ओर चीनी विश्वासघात था। परंतु फिर भी हमें व्यावहारिक और वास्तविक रूप से वर्तमान को देखना होगा। जहां भारत और चीन दोनों एशिया महाद्वीप की बड़ी शक्तियां हैं। विकासशील देशों में केवल चीन तथा भारत ऐसे देश हैं जिनकी जनसंख्या 1 अरब से अधिक है तथा यह दोनों देश राष्ट्रीय कायाकल्प के ऐतिहासिक मिशन के साथ ही विकासशील देशों की सामूहिक उत्थान प्रक्रिया को गति देने में महत्वपूर्ण प्रेरक की भूमिका निभा सकते हैं। ऐसे में दोनों देशों को विवादों का समाधान करने के लिए वास्तविक और सार्थक प्रयास करने होंगे।

"चीन के साथ टकराव के बाद स्वाभाविक है कि भारत का फोकस लद्दाख पर है, जहां गतिरोध अभी जारी है। लेकिन भारत को इस बारे में भी चिंता करनी चाहिए कि नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और मालद्वीप समेत अन्य पड़ोसी देशों में भी चीन का प्रभाव बढ़ रहा है। यह वह क्षेत्र है जहां भारत के खास हित है और उसे चीन पर

निगाह रखनी होगी। लेकिन भारत को अपनी 'पड़ोसी पहले' नीति पर ज्यादा ध्यान देते हूए मजबूत आर्थिक संबंधों पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।"[8]

अन्यथा चीन भारत और उसके पडोसियों के कमजोर होते संबंधों का उपयोग अपने हित में करेगा। यही कारण है कि "जब पिछले दो महीनों से भारत चीन की पश्चिमी सीमा में सैनिकों की लगातार मिंडत हो रही थी तो नेपाल ने भी आक्रामक तरीकें से भारत के लिपुलेख, लिम्प्याधूरा और कालापनी को क्षेत्रें को हड़पने की कोशिश की। ..... चीन, न केवल सीमा के कई बिंदुओं पर तनाव और अस्थिरता फैला रहा है बल्कि वह नेपाल और भूटान को भी उकसा व धमका कर भारत की परेशानियों को बढ़ाने मे लगा हुआ है।"[9]

भारत चीन संबंधों को सामान्य बनाने हेतु सुझाव -

1962 की युद्ध के पश्चात एशिया और अफ्रीका के कुछ मित्र राज्यों ने दोनों देशों के सीमा विवाद को हल करने हेतु श्रीलंका की राजधानी कोलंबो में 1962 में एक सम्मेलन किया। जिसमें कम्बोडिया, म्यांमार, श्रीलंका, घाना, इंडोनेसिया तथा संयुक्त अरब गणराज्य के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर कोलंबो प्रस्ताव के 5 सूत्र रखें।

साथ ही सीमा विवाद को हल करने हेतु विभिन्न विशेषज्ञों ने बहुत से उपाय बताएं ।

1. भारत अक्साईचिन के उस क्षेत्रफल को चीन का मान ले जहां उसने सड़क बना ली है इसके बदले में इसी लद्दाखी क्षेत्र में अक्साईचीन के अतिरिक्त जितनी भी जमीन है सोडा, लिंगजी तांग, चांग चेनमो घाटी, दीप सांग तथा लानक और इमजोर ला के आसपास का क्षेत्र चीन भारत को वापस लौटा दे।
2. इसी प्रकार पूर्वी क्षेत्र में चुम्बी घाटी पर भारत का प्रभावी अधिकार रहा है उसका प्रशासन भारत को लौटा दिया जाए और मैक मोहन रेखा को चीन वैधानिक सीमा रेखा की मान्यता दे दे इस आधार पर समझौते का प्रयास किया जा सकता है।
3. दोनों देश मैत्रीपूर्ण सहयोग की सामान्य प्रवृत्ति को समझें। परंतु ऐसा लगाता नहीं है। बल्कि "ऐसा लगता है कि भारत-अमेरिका के बीच उभरे मजबूत रिश्तों को देख चीन मान चुका है कि भारत उसका विरोधी है, जबकि भारत ने बीजिंग के विरूद्ध अमेरिका का सहायक बनाने से इंकार कर दिया है और चीन भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार सहयोगी है"[10]
4. आपसी समन्वय को बढ़ायें ।
5. मतभेदों को यदि सुलझा नहीं सके तो उन्हें बढ़ाने से रोके।
6. दोनों देशों के लाभ वाले क्षेत्रों को सतत् बढ़ावा दे ।
7. भारत की वसुधैव कुटुंबकम और चीनी दर्शन 'सर्वभौमिक शांति' तथा 'सर्वभौमिक प्रेम की अवधारणा' को व्यवहारिकता के धरातल पर लाये।
8. यह सच है कि दोनों देशों में सीमा विवाद है परंतु दोनों देशों के बीच आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाना होगा।
9. आने वाला समय एशिया का होगा। एक आंकड़े के अनुसार आने वाले समय में वैश्विक अर्थव्यवस्था में एशिया

की हिस्सेदारी लगभग 50 प्रतिशत होगी। ऐसे में एशिया की ताकत चीन और भारत को समझना होगा कि इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार का तनाव और आपसी वैमनस्य विकास और वृद्धि को नुकसान ही पहुंचायेगा। भारत चीन के साथ मौजूदा तनाव को किस प्रकार हल करेगा, यही चीन के साथ हमारे भावी संबंधों का आधार होगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय हितों की रक्षा हमारा प्राथमिक संकल्प है। हाल ही इसी भावना ने विश्व पटल पर भारत की साख बढ़ाई है ध्यान रखना होगा कि चीन केवल ताकत को ही सलाम करता है।"[11]

इसके बाद भी जब तक समस्या का समाधान नहीं होता तब तक दोनों राष्ट्रों को कट्टर राष्ट्रवाद से हटकर उदार मैत्री भाव की ओर जाना होगा।भारतीयों में भारतीयता का भाव जागना होगा। केवल चर्चा, विमर्श, समीक्षावर्ता, दौरों से दोनों देशों के बीच संबंध अच्छे नहीं होंगे। सबंध तब अच्छे होंगे जब दोनों देश आर्थिक बराबरी पर खड़े हो इसके लिए भारत को अधिक प्रयास करने होंगे ताकि चीनी बाजारों पर से भारत की निर्भरता कम हो। लोकल को वोकल करना होगा तब बिना किसी प्रतिबंध के चीनी उत्पादों का बाजार देश में सिमटेगा। जिससे भारत आर्थिक रूप से सशक्त होगा तो चीन को भी इस नुकसान से बचाने के लिए संबंधों को मधुर बनाने का दबाव के साथ रहना होगा।

संदर्भ -

1. दैनिक भास्कर - 4 जुलाई 2020
2. दैनिक जागरण - दिल्ली 27 मई 2020
3. दैनिक भास्कर - 8 जुलाई 2020
4. दैनिक भास्कर - 8 जुलाई 2020
5. दैनिक भास्कर - 5 जुलाई 2020
6. पत्रिका - 1 सितम्बर 2020
7. पत्रिका - 15 सितम्बर 2020
8. दैनिक भास्कर 27 जून 2020
9. पत्रिका 9 जुलाई 2020
10. दैनिक भास्कर - 26 जून 2020
11. पत्रिका 19 जून 2020

❖ ❖ ❖